Hindi Khabar – December 2018

हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका)

HINDI SHIKSHA SANGH – South Africa
Street Address: 30 Oak Street, Kharwastan, Durban 4092
Postal Address: P O Box 56431, Chatsworth, Durban 4030

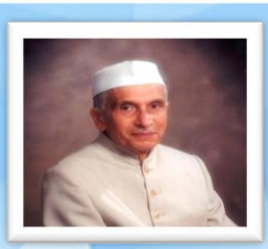

Pandit Nardevji Vedalankar
founded
Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
April 25, 1948

Words of congratulations from Professor Harimohan Kulpati of Vishwavidyalaya S Shikohobad, Firozabad, Uttar Pradesh, Bharat

"हिंदी खबर का नवम्बर 2018 अंक मिला। बहुत तन्मयता के साथ आप हिंदी के प्रचार प्रसार में -जुटे हैं, आपको सादर प्रणाम। अंक की सामग्री स्तरीय और ज्ञानवर्धक है। इसलिए पठनीय है। सुदूर अफ्रीका में हिंदी की ज्योति आप जैसे हिंदी साधकों के हाथों में जलती रहे, यही कामना है। "

Senior Examination Centres in Benoni and Midrand – Gauteng

Hindi Shiksha Sangh (South Africa) Top 3's: Senior Grade Results 2018

Exam. No	Surname	Name	Grade	School
5024	Maharaj	Hemawathie	Prabodh	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
5015	Thirusha	Ramsudh	Prabodh	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
5020	Ramnaraj	Tridhara	Prabodh	Jaagruti Hindi Patshala, Midlands
6007	Singh	Sanam	Praveen	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
6005	Ramchunder	Mala	Praveen	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
6002	Jugath	Sauvira	Praveen	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
7002	Maharaj	Shriya	Parichay	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
7003	Jumna	Anusha	Parichay	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
7000	George	Phulmathy	Parichay	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
8000	Ramnarain	Thiromanee	Visharaad	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
8002	Pillay	Nirupa	Vishaarad	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
8001	Chirkoot	Oosha Devi	Vishaarad	Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
9000	Rao	Isabel	Kovid	Benoni Hindi Patshala, Gauteng

Picture of Conference Committee

Srimati Sunita Narayan is the chief co-ordinator of this unique conference. She is passionate about Hindi promotion, a Hindi teacher, an author, Computer Hindi Programme Developer and a Committed Community Worker. In August 2018, at the 11th World Hindi Conference in Mauritius, the Government of India honoured her for her contribution for the development of Hindi teaching. She was born in Fiji and now lives in New Zealand, managing a successful Hindi School in Wellington

Hindi in Fiji

There are thousands of people in Fiji who speak and understand Hindi. Despite being used extensively in media and its presence in universities, somehow there has never been an International Conference on Hindi in Fiji.

Fiji has strong traditional ties with Pacific countries and sentimental connections with the indentured countries. Apart from these, writers and academics from America and other countries are also expected to attend the event. Hindi media will be covered extensively in this conference apart from academic and historical topics. Therefore, the forthcoming Conference will be historic.

Although Hindi is not the National Language of India or Fiji (it is among the Official Languages of the two countries), it is widely understood and spoken mainly influenced by Hindi films, Hindi television programmes featuring Hindi film stars. In New Zealand, Hindi is the fourth most widely spoken language (according to Statistics New Zealand) but it is not known how many young New Zealanders can read and write Hindi. Organisations such as the 'Hindi Language and Culture Trust,' 'Teach Hindi New Zealand' and 'Wellington Hindi School' are actively encouraging New Zealanders to learn the language.

Topics for the conference are:

1. Hindi Literature 2. Diaspora Writings 3. Best Practices of teaching and learning Hindi 4. Hindi Media 5. Status of Hindi- Challenges and Opportunities 6. Career Opportunities from Hindi education 7. Hindi and Technology 8. Importance of Devanagari Script 9. Youth and Hindi 10. Hindi in Fiji 11. Hindi in Australia 12. Hindi in New Zealand 13. Hindi in Indentured Countries 14. Ramayan and Hindi 15. I-Taukei Language and Hindi and 16 Close Relationship

Special Events

December 1, 2018: Kendra Hindi Patshala, Kharwastan, Annual Awards Day

December 9, 2018

Students of the Franklin Township School District, in association with the Hindi Sangam Foundation presented their written and oral Hindi skills to their parents and other invited guests at the auditorium of Bharat Sevashram Sangha in Kendall Park, New Jersey

December 7: Port Shepstone, Marburg Awards Evening

केंद्र सरकार के कर्मचारियों हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2017 के लिए हिन्दी मौलिक पुस्तक लेखन के लिए डॉ प्रदीप कुमार सिंह लेखक को उनकी पुस्तक भारतीय कृषि उत्पादन विपणन एवं इनकी समस्याएँ के लिए द्वितीय पुरस्कार माननीय श्री एम वेंकैया नायडू उप राष्ट्रपति द्वारा १४ सितंबर २०१८ को नई दिल्ली में विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में प्रदान किया गया

Natalie Hindi: Continued from November 2018 Issue…

South Africa: Professor Rambhajun Sitaram writes on "नेटाली हिन्दी (Natalie Hindi) in South Africa

हिन्दी / नेटाली हिन्दी / भोजपुरी का वैज्ञानिक अध्ययन

दक्षिण अफ़्रीका में हिन्दी / भोजपुरी का वैज्ञानिक अथवा भाषा वैज्ञानिक अध्ययन / विश्लेषण प्रो .राजेन्द मिस्त्री ने किया । वे डर्बन -वेस्टविल विश्वविद्यालय में प्राचीन अंग्रेजी साहित्य पढ़ाते थे ,तथा) Texas (विश्वविद्यालय से भाषा-विज्ञान में M.A .की उपाधि प्राप्त थे । 1980 के दशक में वे डर्बन -वेस्टविल के भारतीय भाषा के अध्यक्ष) और इन पंक्तियों के लेखक (के सह-निर्देशन में Cape Town विश्वविद्यालय से "A Sociolinguistic History of Bhojpuri-Hindi in South Africa" शोध प्रबन्ध का पंजीकरण कराया । यह एक बृहद कार्य था ,परन्तु मिस्त्री ने भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर इस कार्य को सफलता पूर्वक समाप्त किया । इस शोध प्रबन्ध में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार के भोजपुरी क्षेत्र के भारतीयों की भाषा, उसका विकास, विकार, ह्रास तथा लोप की संभावनाओं पर उनके शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत है । यह शोध कार्य ग्रंथ रूप में "Language In Indenture" के नाम से Witwatersrand University द्वारा 1991 में प्रकाशित हुआ । भारत से बाहर हिन्दी, हिन्दी भाषियों तथा भारतीयों की संघर्ष यात्रा के इतिहास में यह शोध एक स्तुत्य योगदान है ।

मिस्त्री की खोज का एक नतीजा था भौगोलिक आधार पर भाषा का विश्लेषण तथा वर्गीकरण । पृष्ठ 65-64 पर भोजपुरी की क्रियाओं को लेकर यह वर्गीकरण हुआ है यथा तटीय) coastal (और पहाड़ी) uplands (। उदाहरणः

क्रिया – “देख”

काल – “भविष्यत्काल”

A. तटीय क्षेत्र एक वचन तथा बहुवचन

हम देखब

तू देखबे

ऊ देखी

B. पहाड़ी क्षेत्र एक वचन तथा बहुवचन

हम देखेगा

तू देखेगा

ऊ देखेगा / देखी

ऊपर्युक्त से यह तथ्य सामने आता है कि क्रियाओं के भेद से बोलियाँ अलग प्रतीत होती हैं । मिस्त्री ने यह जानकारी दी है कि तटीय क्षेत्र के क्रिया रूप साउथ अफ़्रीकन भोजपुरी में स्थिर रूप है) जिस में एकवचन तथा बहुवचन एक सा हैं (। पहाड़ी या uplands की क्रियाओं का स्त्रोत उन्होंने मानक हिन्दी से जोड़ा है । सुनीति कुमार चटर्जी की बज़ार हिन्दुस्तानी का “एगा” रूप भी इससे सम्बद्ध है । नेटाल के पहाड़ी या uplands क्षेत्र तथा तटीय इलाके में ,जैसे कि प्रान्त और देश-भर में हो रहा है - आबादी बदल रही है । 1994 की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश भर में प्रवेश और निवास की छूट हो गई ,तथा पुरानी ,स्थापित बस्तियाँ उजड़ रही हैं । भाषिक परिस्थितियाँ भी बदल गयी । अब तटीय हिन्दी भाषी ‘देखेगा’ भी कह सकता है और पहाड़ी ‘देखब’ । दक्षिण अफ़्रीका में आर्य समाज के अनुयायी ,गुजराती मूल के लोग तथा पिछले 20 वर्षों से दक्षिण अफ़्रीका में आये अनिवासी भारतीय यहाँ की नेटाली अथवा भोजपूरी से अविज्ञ है । यह अवश्य माना जाएगा कि भोजपुरी क्षेत्र के ,या मोरीशस निवासी हमारी भोजपुरी या नेटाली से काम ले सकते हैं । हमारी हिन्दी पाठशालाओं में ,तथा उन सरकारी-स्कूलों में जहाँ भारतीय भाषाएँ पढ़ायी जा रही हैं ,मानक या Standard Hindi पढ़ायी जा रही है । भोजपुरी और अन्य स्थानीय बोलियों का प्रयोग सीमित होते जा रहा है - पुरानी पीढ़ी के स्त्री-पुरुषों के एकान्त में संभाषण ,भोजपुरी/ चटनी गाने अथवा फिल्मों की भाषा तक । आवश्यकता इस बात की है कि हम विरासत में प्राप्त भाषाओं के उन गुणों-तत्वों को बचाये ,जिससे हमें मानसिक सुख तथा बौद्धिक संतोष प्राप्त हो । इन्हें हिन्दी तथा जीवन की मुख्य धारा से जोड़ना चाहिए । इन में रचित धार्मिक ,सांस्कृतिक ,सामाजिक कृतियों का प्रयोग तथा सम्मान उपयुक्त अवसरों पर करना चाहिए ।

प्रारम्भिक हिन्दी शिक्षा

दक्षिण अफ़्रीका में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का शिक्षण तथा उनके प्रचार-प्रसार भारतीयों का निजी मामला रहा है । 1860 से 1927 तक यहाँ जो भी सरकार शासन में आयी ,गरीब मज़दूरों के बच्चों को शिक्षा देने से इनकार करती थी । भारतीय मज़दूर तथा उनके वंशज अपने बच्चों को उन्नीसवीं शताब्दी में चर्च अथवा नेटाल सरकार के स्कूलों से दूर रखना चाहते थे । वे धर्म परिवर्तन से भयभीत थे । इसके अलावा , प्रशासन ने गिरमिटिया भारतीयों को इस देश के अस्थायी निवासी मानते थे ,जो आयकर भी नहीं देते थे) Henning 1993: 165)।

अनेक शोधपत्रों में हिन्दी और प्रवासी भारतीयों की प्रारम्भिक स्थिति का ब्योरा दिया गया है । आगे कतिपय पत्रों की विवेचना की जाएगी । यहाँ इतना कहना पर्याप्त होगा कि सन् 1912 से हिन्दू महासभा की स्थापना से धर्म के क्षेत्र में हिन्दुओं को एक प्रतिनिध स्वरूप संस्था मिली । हिन्दी भाषा को 1948 तक प्रतीक्षा करनी पड़ी । पंडित नरदेवजी वेदालंकार हिन्दी तथा गुजराती के प्रशिक्षित अध्यापक थे अतः उन्होंने हिन्दी शिक्षा की व्यवस्था स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा दृढ़ बनायी ,और हिन्दी शिक्षा संघ ,दक्षिण अफ़्रीका की स्थापना करके तथा 27 वर्षों तक उसकी बागडोर संभालकर हिन्दी शिक्षा को एक सुनियोजित तथा शैक्षिक दृष्टि से स्तरीय बनाया । राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ,वर्धा ,की परीक्षाओं में उन्होंने-35 36वर्षों तक हज़ारो छात्रों को प्रवेश दिलाया । आज हिन्दी शिक्षा संघ स्वतंत्र रूप से परीक्षाएँ चलाता है । इन पंक्तियों के लेखक तथा प्रो .उषा शुक्ल के मार्गदर्शन तथा सक्रिय सहभागिता से हिन्दी आगे बढ़ रही है । यह स्थिति तभी संभव हुई जब तत्कालीन युनिवर्सिटी ऑफ़ डर्बन-वेस्टविल में प्रो .सीताराम ने भारतीय भाषा विभाग का अध्यक्ष पद संभाला तथा हिन्दी शिक्षण को उच्च शैक्षिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया 1971) से 1999 तक (। हिन्दी शिक्षा संघ और उसकी वाणी - यानी हिन्दवाणी रेडियो ,हिन्दी भाषा और संस्कृति को उच्च आदर्शों से युक्त ,समीचीन तथा युगानुकूल बनाने के लिए संकल्पबद्ध है । हिन्दी जगत तथा वैश्विक हिन्दी शिक्षण प्रणाली से जुड़े रहना तथा उच्चतर हिन्दी शिक्षा प्रदान करने की योजनाएँ हिन्दी शिक्षा संघ के विचाराधीन हैं । महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के “विदेशों में हिन्दी शिक्षण हेतु मानक पाठ्यक्रम” पर भी ध्यान दिया गया ,तथा उनमें से कुछ आवश्यक तत्वों को लिया जाएगा । हिन्दी शिक्षा संघ हिन्दी में 10 + 2तक पढ़ाकर आगे BA के लिए महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय से विचार विनिमय करेगा ।

हिन्दी शिक्षा संघ के इतिहास में ,आरम्भ से ही अनेक हिन्दी भाषी) तथा कुछ गुजराती भाषी (हिन्दी की उच्च शिक्षा तथा प्रमाण पत्र प्राप्त कर चुके हैं । श्री बाल गणेश उनमें से सर्वप्रथम थे जिन्होंने वर्धा की राष्ट्रभाषा रत्न की परिक्षा उत्तीर्ण की 1957) में(। श्री गणेश हिन्दी शिक्षा संघ के महामंत्री तथा छः वर्षों तक अध्यक्षपद संभाला । श्री बाल गणेश ने 1998 में हिन्दी शिक्षा संघ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर एक पुस्तिका

तैयार की- “The Hindi Language in South Africa” । इस पुस्तिका में हिन्दी संबन्धी सूचनाएँ मोटे तौर पर दी गयी है ,फिर भी यह बहुत ही सटीक तथा उपयोगी है । पृष्ठ 3 पर श्री गणेश ने यह स्वीकार किया है अवधी रामचरितमानस की भाषा होने के कारण दीर्घकाल तक जीवित रहेगी । इन का भी यह विश्वास है कि प्रव्रजन तथा अन्य कार्यो से नेटाली हिन्दी के क्षेत्रीय भेद लुप्त हो रहे है1998) :4) ।

सन् 1860 से ही अंग्रेज प्लांटरों के खेतों में एक साथ बैरक्स में रहने से ,और कुछ हद तक दक्खिनी उर्दू के संपर्क से ,तमिल भाषी हिन्दी आसानी से बोलने लगे ,यद्यपि वह गाँधी जी की टूटी-फूटी हिन्दी ही रही होगी । श्री गणेश जी भाषा के विविध आयामों में रुचि रखते थे ,तथा वे अपने पास-पड़ोस की भाषिक गतिविधियों पर ध्यान देते थे । निम्नलिखित संवाद में अम्मा एक तमिल भाषी माता है ,और रानी हिन्दी भाषी गृहणी ।

अम्मा : बच्चा कैसे रहता ,रानी ?

रानी : नइ अच्छा रहता ,अम्मा ।

अम्मा : का हो गया ?

रानी : छाट करता । पेट दुखता ।

अम्मा : हवा पकड़ लिया । माली के पास ले जाना ।।

रानी : वो बोलता पहले डाक्टर को बताना ।

धयान देने योग्य है कि नेटाली हिन्दी बोलनेवाली रानी भी अम्मा के सादृश्य पर वैसे ही बोलती है ,जैसे अम्मा बोलती है । अगर नेटाली हिन्दी जैसी कोई भाषा की श्रेणी है ,तो ऊपर का संवाद भी उसमें आ जाएगा । भाषिक प्रयोग जैसे "है" के स्थान पर "रहता" ,तथा झाड़-फूँक में आस्था ने प्रवासी भारतीयों को एक विशेष पहचान दिलायी । इसके आगे गिरमिटियों के वंशजों द्वारा हिन्दी भाषा पर किया गया कार्य ,तथा हिन्दी रचनाओं का सर्वेक्षण किया जाएगा । इस के पश्चात समसामयिक साहित्य सृजन पर ध्यान दिया जाएगा ।

हिन्दी चिंतन और सृजन

इस खण्ड में पहले प्रारम्भिक काल) सन् (1900 से की गयी हिन्दी रचनाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा जिस से “पुरानी” हिन्दी तथा बाज़ार की हिन्दी भी दिखेगी ।

नीचे “ईंडियन ओपिनियन” का हिन्दी विज्ञापन है 1906-01-23) पृष्ठ (423 सनलाइट साबुन का । इससे उस समय की हिन्दी भाषा का पता चलता है, और यह भी प्रतीत होता है कि अधिक से अधिक भारतीयों तक पहुँने के लिए यह विज्ञापन “हिन्दी” में दिया गया है ।

कपड़ा धोने के लिए सनलाइट साबुन
दुनिया में प्रख्यात हुए है सबब

प्रथम – इस साबुन से बारीक सुतर को कीसी
रकम – का नुकसान नहि होता है ,
दूसरा – यह साबुन से धोने में दूसरा साबुन
से कमती तकलीफ़ लगता है.
तीसरा – यह साबुन की बनावट में जो
कभी कोई मलीनता साबीत कर देवे
तो उसको पौंड एक हज़ार इनाम दिया
जाता है :
यह साबुन दुनिया में जास्ति खपते है

दृष्टव्य है कि छठी तथा ग्यारहवीं पंक्तियों की भाषा कुछ अटपटी सी है ।

स्वामी भवानी दयाल संन्यासी के कुछ विचार पहले भी उद्धृत किए गये हैं ।

अब उनकी साहित्यिक प्रतिभा तथा योगदान पर भी दृष्टिपात् करना न्यायसंगत होगा ।

स्वामी जी अपने विचारों तथा उद्गारों में कठोर प्रतीत होते है, विशेषतः अत्याचारी शासकों तथा धर्म विरोधी आचारण करनेवालों पर । फिर भी उनके अन्तःकरण में असीम करूणा की स्त्रोतस्विनी विद्यमान थी । गिरमिटियों के नरकतुल्य जीवन के संदर्भ में उन्होंने “प्रवासी की आत्मकथा” 1947): (3 में लिखा:

वास्तव में उन अभागे भारतीयों की करुण कथा
इतनी विस्तृत, हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी है कि यदि
पृथवी को पत्र और समुद्र को स्याही बनाकर लिखने बैठें
तो भी उसे यथावत् अंकित कर सकना असंभव है ।

ऊपर की पंक्तियाँ शर्तबन्द मज़दूरों या गिरमिटियों की वास्तविक कहानी है, जो सभी गिरमिटियों के देशों में घटित होती थी, और जिसका समाधान आत्महत्या तक पहुँच जाता था।

स्वामी भवानी दयाल ने अपनी आत्मकथा में नेटाल तथा भारत में भारतीयों पर अन्याय एवं क्रूर शासन के विरोध में संघर्षरत थे । स्वदेशी तथा स्वराज आन्दोलन में शामिल होने पर उन्होंने यह लिखाः1947) :(62

> मुझे तो मानो मुँह-माँगी मुराद मिल गयी है । मैं मस्त फकीरकी तरह गाँव-गाँव घूमने और गला फाड़-फाड़कर स्वदेशी पर लेक्चर झाड़ने लगा । मैं गाँव के आदमियों को निरा गँवार समझता और वे मुझे सनकी समझते ।

स्वामी भवानी दयाल भोजपुरी अथवा ग्रामीण हिन्दी भी जानते थे, लेकिन धर्म की तरह, वे संभवतः भाषा को भी सुधार का विषय समझते थे । अपनी एक रचना "नेटाली हिन्दू" में जो नाटक शैली में लिखी गयी है, वे नेटाल के हिन्दुओं का पिछड़ापन, उनकी धार्मिकता, नैतिकता तथा अंधविश्वास पर आधारित आचरण इत्यादि की भर्त्सना की है । इस उदाहरण से कई बातें स्पष्ट हो जाएँगीः) भवानी दयाल1920 :(30

> भगतिनः ई जेकवा के मेहरूआ तो मोकै डाईन जान पड़त है । भौरे उठके नहाई और फिर बैठके मुनमुन करके मन्तर पढ़ी अउर अंगार में घीव डाली के अगियारी करी । इ डाईन हमनी के डँस डाली । ई कहाँ से जेकवा के पल्ले पड़ गई ।

स्वामी भवानी दयाल के अनुज श्री देवी दयाल स्वामी जी के साथ हिन्दी प्रचार कार्य करते थे । देवी दायल ने "हिन्दी आल्हा" की रचना करके हिन्दी आश्रम, डर्बन, नेटाल से 1916 में प्रकाशित किया । इस कृति में उन्होंने हिन्दी के प्रति भारत और दक्षिण अफ़्रीका में सद्भावना, तथा हिन्दी के प्रसार-प्रचार पर आग्रह व्यक्त किया है । आल्हा विधा में जोश और संकल्प दिखाई देते हैं । देवी दायल जी ने प्रारम्भ में वन्दना कीः

> पहिले सुमिरों श्री जगदिश्वर, जाकर नाम अलख ओंकार ।

तब भारत में हिन्दी की परिस्थितियों पर चर्चा करके वे लिखते है:

> हिन्द की बातें हिन्द में रह गई, अब इस देश की सुनो विचार ।

देवी दयाल जी को पता चला कि इंडियन ओपिनियन का स्वर्ण अंक अंग्रेजी, गुजराती तथा तमिल भाषाएँ लेकर निकाला गया – हिन्दी उस में नहीं थी । यह देवी दयाल तथा अन्य हिन्दी भाषियों के लिए आक्रोश का कारण था । हिन्दी माता की अवहेलना का दुख इस प्रकार व्यक्त किया गया ।

> माता रोवें तड़प-तड़प कर, दुखकर हाय ठिकाना नाय
> बीड़ा उठाता हूँ मैं भैया, औ माता का करूँ उद्धार

आल्हा की शैली लोकप्रिय है – इस शैली में कही गयी बातें रौद्र, बीभत्स, वीर तथा भयानक रसों का संचार करती हैं । डर्बन के पंडित बलीराम तुलसीराम, जो एक विद्वान तथा समाजसेवी सज्जन थे, इसी आल्हा छन्द में "डर्बन का बलवा")यानी 1949 Riots) नामक काव्य सन् 1952 में डर्बन के Universal Printing Works में छपवाया ।

13जनवरी 1949 को डर्बन के भारतीयों पर जो वज्र टूटा उसका सत्य आज तक शायद सामने नहीं आया है । तुलसीराम ने जो आम जनता में प्रचलित था, वही भाव व्यक्त किया – कि गोरों को भारतीयों के प्रति घृणा तथा असहिष्णुता थी, व्यापार इत्यादि में गोरे भारतीयों के साथ होड़ में टिक नहीं सकते थे । इसी समय नयी Apartheid का निर्माण करने वाली सरकार बनी थी और वे भारतीयों के प्रत्यागमन) repatriation) के प्रयास में विफल हुए । सब से अधिक आश्चर्य तथा दुख की बात थी, और है, कि परंपरागत रूप से एक साथ रहने वाले भारतीय और अफ़्रीकन एक दूसरे के शत्रु बन गये और एक दूसरे के लिए बुरे से बुरे अपशब्द का प्रयोग करने लगे और जघन्य अपराध पर उतर आये । कारण बतलाया गया था कि एक भारतीय व्यापारी ने एक अफ़्रीकन युवा ग्राहक को चाँटा मार दिया । जिसके परिणामस्वरूप उसे कुछ हल्की चोट लग गयी । इतने से ही एक नगर व्यापी दंगा शुरू हो गया; 1949 में, जब मामूली संचार की व्यवस्था नगण्य थी । इसके पीछे षड़यंत्र की बू थी । इन पंक्तियों के लेखक को ठीक याद है जब उनके गाँव के लोग – डर्बन से 40 मील दूर, शाम होते ही उनके परिवार के आँगन में जुट जाते थे, क्योंकि इस घर के चारों और कँटीले तार का बाड़ा था, और लोग सुरक्षा महसूस करते थे । उन दिनों लोग शुबहे और आतंक में जीते थे ।

पं .तुलसीराम उस समय का अनुभव किया हुआ हाल "डर्बन के बलवा" में सुनाते है । आल्हा छन्द से भयानक / रौद्र तथा वीर रस का उत्पादन सहज ही हो जाता है । शुरू में ही आल्हा पद्धति में गाते हैं ।

सुमिरन करके ओंकार की, और ब्रह्मा को शीश नवाय ।
लिखूँ हकीकत बलवा वाली, जो नेटाल को दिया कंपाय ।।

पहले दिन के विवरण के बाद जिस में काले लड़के पर आक्रमण, पुलिस की अकर्मणयता इत्यादि चित्रित है, कविवर लिखते हैं – (पृष्ठ(3

यहाँ की बातें यहीं रह गयीं, दूसरे दिन का सुनो हवाल ।
पड़ी मुसीबत सब इंडियन पर, निद्रा भोजन हुआ मुहाल ।।

इसके बाद भारतीयों पर टूटने वाले वज्र का विवरण है । पं .तुलसीराम ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि गोरे और अक्रीकन समाज में भी बहुत से लोग भारतीयों के प्रति सद्भावना रखते थे, तथा उनको बचाने की चेष्टा करते थेः

> कितने हबशी अच्छे घरके, कई इंडियन को दिया बचाय पृष्ठ6
> कितने गोरन के टेक्सी में , बहुतन गोरे भये सहाय । पृष्ठ6

यह काव्य एक दुखद घटना का विवरण देता है, फिर भी इसमें निहित भाषा संबन्धी बातों की और ध्यान आकृष्ट होता है । पंडित तुलसीराम जूलू भाषा संबन्धी मामूली जानकारी प्रदर्शित करते है, यथा “कूला”, “मकूला”)कुली(, च्वाला और शिमियाना) शराब(, अम्फ़ान) लड़का(, शाया मकूला) कुलियों को मारो (। पृष्ठ 10 का दमूला शब्द भारतीयों में प्रचलित था, चक्की) mill) के लिए, जैसे चीनी का दमूला) डमोला (जो मोरीशिस से आयात किया गया था Creole में de moulin का अर्थ था चक्की। जैसे कि कहा गया है, यह घटना ऐतिहासिक है, और भानवीय संबंधों की क्षणभंगुरता की परिचायक है ।

हिन्दी में उच्च शिक्षा

युनिवर्सिटी ऑफ़ डर्बन-वेस्टविल के भारतीय भाषा विभाग में पूर्वस्नातक स्तर की हिन्दी 3 वर्ष तक पढ़ाई जाती थी । तदोपरान्त एक वर्ष का ऑनर्स कोर्स था, और MA PhD शोध द्वारा प्राप्त की जाती थी । अनेक कारणों से, यद्यपि ऑनर्स तक की परीक्षाएँ हिन्दी में ही दी जाती थी, शोध प्रबन्ध अंग्रेज़ी में होते थे । रामचरितमानस का व्यापक प्रभाव विद्यार्थियों के विषय-चयन से दृष्टिगत होता है । रोमीला रामकिसुन तथा अकेश सिंह ने मानस के विभिन्न नैतिक तथा आध्यात्मिक पहलुओं पर शोध किया। उदाहरणार्थ अकेश सिंह ने “Ramayana as a basis for Moral Transformation in Society” विषय पर MA प्राप्त की । यह शोध प्रबन्ध प्रो .उषा शुक्ल तथा प्रो .सीताराम के संयुक्त निर्देशन में संपन्न हुआ । इस शोध के निष्कर्ष में यह तथ्य उल्लेखनीय है –

> रामायण नैतिकता से ओत-प्रोत है, जब हम यह समझ लेंगे, तो स्पष्ट हो जाएगा कि रामायण आदर्श मानवता तथा आदर्ष समाज के सभी गुणों से पूर्ण है) अंग्रेज़ी से अनूदित (।

यह शोध-कार्य शिक्षा-व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में किया गया था। मीना मोतीलील ने भी अपना MA का शोध Integral Development of the Child: Perspectives from Hindi Literature शिक्षा क्षेत्र में किया। इसी प्रकार चन्द्रिकादेवी महाराज ने हिन्दी भाषा और सांस्कृतिक प्रगति पर MA का शोध किया ।

End of article.

हिन्दी की ज्योती जलती रहे